ढैंचा कृषि भूमि के लिए एक वरदान है

हरी खाद से अभिप्राय :- उन फसलों से तैयार की जाने वाली खाद से है जिन्हें केवल खाद बनाने के उद्देश्य से ही लगाया जाता है। इसमें ढैंचा की फसल बोने के उपरान्त फूल, फल आने से पहले ही मिट्टी में दबा दिया जाता है। फसलें सूक्ष्म जीवों द्वारा विच्छेदित होकर भूमि में ह्यूमस तथा पौधों की वृद्धि करती है। इसके अलावा हरी खाद में आने वाली फसलों का उपयोग ईंधन के रूप में भी किया जा सकता है।

मृदा क्षरण, फसल उत्पादन में लगातार कमी का एक प्रमुख कारण है। उत्पादकता में कमी, मिट्टी में कार्बनिक पदार्थों और पोषक तत्वों के स्तर में गिरावट से जुड़ा हुआ है। इस लिए ढैंचा हरी खाद के रूप में किसानों द्वारा उपयोग किया जा सकता है जिससे मिट्टी में कार्बनिक पदार्थ और पोषक तत्वों विशेष रूप से नाइट्रोजन का संरक्षण होता है।

ढैंचा से लाभ :- ढैंचा बोने से कृषकों को निम्न लाभ होते हैं :-

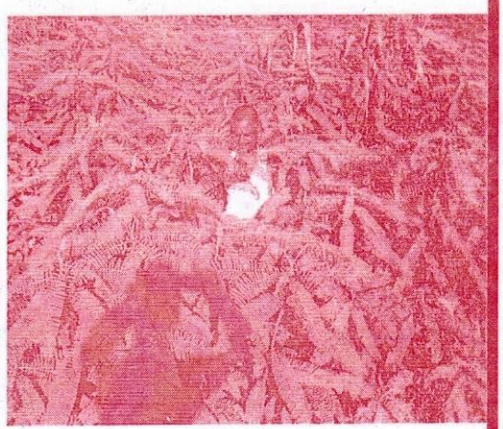

1. ढैंचा के उपयोग से भूमि में कार्बनिक पदार्थों तथा नाइट्रोजन की मात्रा मे वृद्धि होती है।
2. मिट्टी की जल धारण क्षमता में बढ़ोत्तरी होती है।
3. मिट्टी में हवा का संचार अच्छा होता है।
4. ढैंचा बोकर पलटने से खरपतवार पर भी नियंत्रण होता है।
5. ढैंचा के उपयोग से मिट्टी की संरचना अच्छी होती है।
6. ढैंचा का तना सामान्यतः ईंधन के रूप में भी प्रयोग किया जाता है। जिससे कन्डे का उपयोग जलावन के रूप में न होकर विभिन्न प्रकार के उर्वरक बनाने के लिए किया जाता है।

ढैंचा से हरी खाद बनाने की विधि :- बुवाई के 35-40 दिन बाद फसल को काटकर खेत में फैला देते हैं। फिर मिट्टी पलट हल से खेत की जुताई करके पाटा चला देते हैं। इस प्रकार 20-25 दिन के अन्दर ढैंचा काटना एवं पत्तियाँ खेत में सड़कर खरी खाद के रूप में खेत की उर्वराशक्ति बढ़ा देती है।

सौजन्य से-

शोहरतगढ़ एन्वायरन्मेंटल सोसाइटी

-: प्रधान कार्यालय :-

9 प्रेमकुंज, आदर्श कालोनी शोहरतगढ़, सिद्धार्थनगर - 272205

-: रिजनल शाखा :-

एमएमआईजी 1/28 प्रथम तल, सेक्टर-ए सीतापुर रोड योजना, लखनऊ- 226021

सहयोगी संस्था :- जमशेद जी टाटा ट्रस्ट, मुम्बई

Ptd. Shanker Offset Printers, S.Nagar, M.-9935282540